

## सूरह अम्बिया - 21



### सूरह अम्बिया के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 112 आयतें हैं।

इस सूरह में अनेक नबियों की चर्चा के कारण इस का नाम «अम्बिया» है।

- इस में बताया गया है कि सभी नबियों ने अपनी जातियों को बराबर यह शिक्षा दी कि उन्हें अल्लाह के लिये अपने कर्मों का उत्तर देना है फिर भी वह संभलने के बजाये विरोध ही करते रहे और अल्लाह की सहायता सदा नबियों के साथ रही।
- यह भी बताया गया है कि अल्लाह ने संसार को खेल के लिये नहीं बनाया है बल्कि सत्य और असत्य के बीच संघर्ष के लिये बनाया है।
- इस में तौहीद का वर्णन है जो सभी नबियों का संदेश था। और रिसालत से संबंधित संदेहों का जवाब किया गया है तथा रसूलों का उपहास करने वालों को चेतावनी दी गई है।
- नबियों की शिक्षाओं और उन पर अल्लाह के अनुग्रह और दया को दिखाया गया है।
- अन्त में विरोधियों को यातना की धमकी तथा ईमान वालों को शुभसूचना दी गई है। और यह बताया गया है कि नबियों को भेजना संसार वासियों के लिये सर्वथा दया है, और उन का अपमान करना स्वयं अपने ही लिये हानिकारक है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. समीप आ गया है लोगों के हिसाब<sup>[1]</sup> का समय, जब कि वे अचेतना में मुँह फेरे हुये हैं।

إِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ

1 अर्थात् प्रलय का समय, फिर भी लोग उस से अचेत माया मोह में लिप्त हैं।

2. नहीं आती उन के पास उन के पालनहार की ओर से कोई नई शिक्षा<sup>[1]</sup>, परन्तु उसे सुनते हैं और खेलते रह जाते हैं।

3. निश्चेत हैं उन के दिल, और उन्होंने ने चुपके-चुपके आपस में बातें की जो अत्याचारी हो गये: यह (नबी) तो बस एक पुरुष है तुम्हारे समान, तो क्या तुम जादू के पास जाते हो जब कि तुम देखते हो?<sup>[2]</sup>

4. आप कह दें कि मेरा पालनहार जानता है प्रत्येक बात को जो आकाश तथा धरती में है। और वह सब सुनने जानने वाला है।

5. बल्कि उन्होंने ने कह दिया कि यह<sup>[3]</sup> बिखरे स्वप्न हैं। बल्कि उस (नबी) ने इसे स्वयं बना लिया है, बल्कि वह कवि है। अन्यथा उसे चाहिये कि हमारे पास कोई निशानी ला दे जैसे पूर्व के रसूल (निशानियों के साथ) भेजे गये।

6. नहीं ईमान<sup>[4]</sup> लायी इन से पहले कोई बस्ती जिस का हम ने विनाश किया, तो क्या यह ईमान लायेंगे?

7. और (हे नबी!) हम ने आप से पहले

مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنْ رَبِّهِمْ مُحَدَّثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿١﴾

لَا هِيَ إِلَّا قُلُوبُهُمْ وَأَسْرُ الثُّجُوبِ الَّذِينَ ظَلَمُوا هَٰلَ هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ أَفَتَأْتُونَ النُّجُورَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٢﴾

قُلْ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣﴾

بَلْ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ بَلْ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ فَلْيَأْتِنَا بِآيَةٍ كَمَا أُرْسِلَ الْأَوَّلُونَ ﴿٤﴾

مَا آمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ

1 अर्थात् कुर्आन की कोई आयत अवतरित होती है तो उस में चिन्तन और विचार नहीं करते।

2 अर्थात् यह कि वह तुम्हारे जैसा मनुष्य है, अतः इस का जो भी प्रभाव है वह जादू के कारण है।

3 अर्थात् कुर्आन की आयतें।

4 अर्थात् निशानियाँ देख कर भी ईमान नहीं लायी।

मनुष्य पुरुषों को ही रसूल बना कर भेजा, जिन की ओर वही भेजते रहे। फिर तुम ज्ञानियों<sup>[1]</sup> से पूछ लो, यदि तुम (स्वयं) नहीं<sup>[2]</sup> जानते हो।

8. तथा नहीं बनाये हम ने उन के ऐसे शरीर<sup>[3]</sup> जो भोजन न करते हों। तथा न वे सदावासी थे।

9. फिर हम ने पूरे कर दिये उन से किये हुये वचन, और हम ने बचा लिया उन्हें, और जिसे हम ने चाहा। और विनाश कर दिया उल्लंघनकारियों का।

10. निःसंदेह हम ने उतार दी है तुम्हारी ओर एक पुस्तक (कुरआन) जिस में तुम्हारे लिये शिक्षा है। तो क्या तुम समझते नहीं हो?

11. और हम ने तोड़ कर रख दिया बहुत सी बस्तियों को जो अत्याचारी थीं, और हम ने पैदा कर दिया उन के पश्चात् दूसरी जाति को।

12. फिर जब उन्हें संवेदन हो गया हमारे प्रकोप का, तो अकस्मात् वहाँ से भागने लगे।

13. (कहा गया) भागो नहीं। तथा तुम वापिस जाओ जिस सुख-सुविधा में थे, तथा अपने घरों की ओर, ताकि

فَسَلُّوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ①

وَمَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَداً لَا يَأْكُلُونَ الطَّعَامَ  
وَمَا كَانُوا خَالِدِينَ ②

لَمْ صَدَقْنَاهُمُ الْوَعْدَ فَأَنْجَيْنَاهُمْ وَمَنْ نَشَاءُ وَأَهْلَكْنَا  
الْمُسْرِفِينَ ③

لَعَدْنَا أَنْزِلْنَاهُ عَلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ  
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ④

وَكَمْ قَصَبْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَأَنْشَأْنَا  
بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ⑤

فَلَمَّا أَحْسَبُوا ابْسَاسًا إِذَا هُمْ مِنْهَا يُرْكَضُونَ ⑥

لَا تَرْكَضُوا وَأَرْجِعُوا إِلَى مَا أُتْرِفْتُمْ فِيهِ وَمَسْكِنَكُمْ  
لَعَلَّكُمْ تُسَلُّونَ ⑦

1 अर्थात् आदि आकाशीय पुस्तकों के ज्ञानियों से।

2 देखिये: सूरह नहल, आयत: 43।

3 अर्थात् उन में मनुष्य की ही सब विशेषताएँ थीं।



तुम से पूछा<sup>[1]</sup> जाये।

14. उन्होंने ने कहा: हाय हमारा विनाश!  
वास्तव में हम अत्याचारी थे।

15. और फिर बराबर यही उन की पुकार  
रही यहाँ तक कि हम ने बना दिया  
उन्हें कटी खेती के समान बुझे हुये।

16. और हम ने नहीं पैदा किया है  
आकाश और धरती को तथा जो कुछ  
दोनों के बीच है खेल के लिये।

17. यदि हम कोई खेल बनाना चाहते तो  
उसे अपने पास ही से बना<sup>[2]</sup> लेते,  
यदि हमें यह करना होता।

18. बल्कि हम मारते हैं सत्य से असत्य  
पर, तो वह उस का सिर कुचल देता  
है, और वह अकस्मात समाप्त हो  
जाता है, और तुम्हारे लिये विनाश है  
उन बातों के कारण जो तुम बनाते हो।

19. और उसी का है जो आकाशों तथा  
धरती में है, और जो फ़रिश्ते उस के  
पास हैं वे उस की इबादत (बंदना) से  
अभिमान नहीं करते, और न थकते हैं।

20. वे रात और दिन उस की पवित्रता का  
गान करते हैं, तथा आलस्य नहीं करते।

قَالُوا وَيَكُنَّا آتَاكُمَا ظَالِمِينَ ۝

فَمَا زَالَتْ تِلْكَ دَعْوَاهُمْ حَتَّى جَعَلْنَاهُمْ حَصِيدًا  
خَمِيدِينَ ۝

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا الْبَعِيدِينَ ۝

لَوْ أَرَدْنَا أَنْ نَتَّخِذَ لَهُمْ آتَاكُنَا مِنْ لَدُنَّا  
إِنْ كُنَّا فَاعِلِينَ ۝

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا  
هُوَ زَاهِقٌ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ ۝

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ عِنْدَهُ  
لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ۝

يُسَبِّحُونَ أَثِيلَ وَاللَّيْلَ لَا يَفْئُتُونَ ۝

1 अर्थात् यह कि यातना आने पर तुम्हारी क्या दशा हुयी?

2 अर्थात् इस विशाल विश्व के बनाने की आवश्यकता न थी। इस आयत में यह बताया जा रहा है कि इस विश्व को खेल नहीं बनाया गया है। यहाँ एक साधारण नियम काम कर रहा है। और वह सत्य और असत्य के बीच संघर्ष का नियम है। अर्थात् यहाँ जो कुछ होता है वह सत्य की विजय और असत्य की पराजय के लिये होता है। और सत्य के आगे असत्य समाप्त हो कर रह जाता है।

21. क्या इन के बनाये हुये पार्थिव पूज्य ऐसे हैं जो (निर्जीव) को जीवित कर देते हैं?
22. यदि होते उन दोनों<sup>[1]</sup> में अन्य पूज्य अल्लाह के सिवा तो निश्चय दोनों की व्यवस्था बिगड़<sup>[2]</sup> जाती। अतः पवित्र है अल्लाह अर्श (सिंहासन) का स्वामी उन बातों से जो वे बता रहे हैं।
23. वह उत्तर दायी नहीं है अपने कार्य का और सभी (उस के समक्ष) उत्तर दायी है।
24. क्या उन्होंने बना लिये हैं उस के सिवा अनेक पूज्य? (हे नबी!) आप कहें कि अपना प्रमाण लाओ। यह (कुर्आन) उन के लिये शिक्षा है जो मेरे साथ हैं और यह मुझ से पूर्व के लोगों की शिक्षा<sup>[3]</sup> है, बल्कि उन में से अधिकतर सत्य का ज्ञान नहीं रखते। इसी कारण वह विमुख है।
25. और नहीं भेजा हम ने आप से पहले कोई भी रसूल परन्तु उस की ओर यही वही (प्रकाशना) करते रहे कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है। अतः मेरी ही इबादत (वंदना) करो।

أَمْ آتَّخَذُوا إِلَهًا مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُبْشِرُونَ ۝

لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلَ اللَّهِ فَسَدَتَا فَسْبَخَنَ اللَّهُ رَبَّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝

لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْئَلُونَ ۝

أَمْ آتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ هَذَا إِذْ كُؤْمِنَ مَعِيَ وَذُكِرَ مَن قَبْلِي بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ۝

1 आकाश तथा धरती में।

2 क्योंकि दोनों अपनी अपनी शक्ति का प्रयोग करते और उन के आपस के संघर्ष के कारण इस विश्व की व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाती। अतः इस विश्व की व्यवस्था स्वयं बता रही है कि इस का स्वामी एक ही है। और वही अकेला पूज्य है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि यह कुर्आन है और यह तौरात तथा इंजील हैं। इन में कोई प्रमाण दिखा दो कि अल्लाह के अन्य साझी और पूज्य हैं। बल्कि यह मिश्रणवादी निर्मूल बातें कर रहे हैं।

26. और उन (मुशरिकों) ने कहा कि बना लिया है अत्यंत कृपाशील ने संतति। वह पवित्र है! बल्कि वे (फरिश्ते)<sup>[1]</sup> आदरणीय भक्त हैं।

27. वे उस के समक्ष बढ़ कर नहीं बोलते और उस के आदेशानुसार काम करते हैं।

28. वह जानता है जो उन के सामने है और जो उन से ओझल है। वह किसी की सिफारिश नहीं करेंगे उस के सिवा जिस से वह (अल्लाह) प्रसन्न<sup>[2]</sup> हो, तथा वह उस के भय से सहमे रहते हैं।

29. और जो कह दे उन में से कि मैं पूज्य हूँ अल्लाह के सिवा तो वही है जिसे हम दण्ड देंगे नरक का, इसी प्रकार हम दण्ड दिया करते हैं अत्याचारियों को।

30. और क्या उन्होंने ने विचार नहीं किया जो काफिर हो गये कि आकाश तथा धरती दोनों मिले हुये<sup>[3]</sup> थे, तो हम ने दोनों को अलग-अलग किया। तथा हम ने बनाया पानी से प्रत्येक जीवित चीज़ को? फिर क्या वह (इस बात पर) विश्वास नहीं करते?

31. और हम ने बना दिये धरती में पर्वत

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾

لَا يَسْأَلُونَهُ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنْ ارْتَضَىٰ وَهُمْ مِنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾

وَمَنْ يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَهٌ مِنْ دُونِهِ فَلَيْسَ بِنَجْرِهِ جَهَنَّمَ كَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾

أَوَلَمْ يَرَأُوا أَنَّا جَعَلْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ كَانَتْ أَرْثَاقًا فَفَتَقْنَاهُمَا وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا

1 अर्थात् अरब के मिश्रणवादी जिन फरिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहते हैं, वास्तव में वह उस के भक्त तथा दास हैं।

2 अर्थात् जो एकेश्वरवादी होंगे।

3 अर्थात् अपनी उत्पत्ति के आरंभ में।



ताकि झुक न<sup>[1]</sup> जाये उन के साथ,  
और बना दिये उन (पर्वतों) में चोड़े  
रास्ते ताकि लोग राह पायें।

32. और हम ने बना दिया आकाश को  
सुरक्षित छत, फिर भी वह उस के  
प्रतीकों (निशानियों) से मुँह फेरे  
हुये हैं।

33. तथा वही है जिस ने उत्पत्ति की है  
रात्रि तथा दिवस की और सूर्य तथा  
चाँद की, प्रत्येक एक मण्डल में तैर  
रहे<sup>[2]</sup> हैं।

34. और (हे नबी!) हम ने नहीं बनायी है  
किसी मनुष्य के लिये आप से पहले  
नित्यता। तो यदि आप मर<sup>[3]</sup> जायें,  
तो क्या वह नित्य जीवी है?

35. प्रत्येक जीव को मरण का स्वाद  
चखना है, और हम तुम्हारी  
परीक्षा कर रहे हैं अच्छी तथा बुरी  
परिस्थितियों से, तथा तुम्हें हमारी ही  
ओर फिर आना है।

فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٢١﴾

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿٢٢﴾

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ  
وَالْقَمَرَ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٢٣﴾

وَمَا جَعَلْنَا الْبَشَرَ مِنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ أَفَإِنْ  
مِتَّ فَهُمُ الْخُلْدُونَ ﴿٢٤﴾

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَنَبْلُوكُم  
بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٢٥﴾

1 अर्थात् यह पर्वत न होते तो धरती सदा हिलती रहती।

2 कुर्आन अपनी शिक्षा में विश्व की व्यवस्था से एक के पूज्य होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है। यहाँ भी आयत: 30 से 33 तक एक अल्लाह के पूज्य होने का प्रमाण प्रस्तुत किया गया है।

3 जब मनुष्य किसी का विरोधी बन जाता है तो उस के मरण की कामना करता है। यही दशा मक्का के काफ़िरों की भी थी। वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मरण की कामना कर रहे थे। फिर यह कहा गया है कि संसार के प्रत्येक जीव को मरना है। यह कोई बड़ी बात नहीं, बड़ी बात तो यह है कि अल्लाह इस संसार में सब के कर्मों की परीक्षा कर रहा है। और फिर सब को अपने कर्मों का फल भी परलोक में मिलना है तो कौन इस परीक्षा में सफल होता है?

36. तथा जब देखते हैं आप को जो काफिर हो गये तो बना लेते हैं आप को उपहास, (वे कहते हैं) क्या यही है जो तुम्हारे पूज्यों की चर्चा किया करता है? जब कि वे स्वयं रहमान (अत्यंत कृपाशील) के स्मरण के<sup>[1]</sup> निवर्ती हैं।

37. मनुष्य जन्मजात व्यग्र (अधीर) है, मैं शीघ्र तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखा दूंगा। अतः तुम जल्दी न करो।

38. तथा वह कहते हैं कि कब पूरी होगी यह<sup>[2]</sup> धमकी, यदि तुम लोग सच्चे हो?

39. यदि जान लें जो काफिर हो गये हैं उस समय को जब वह नहीं बचा सकेंगे अपने मुखों को अग्नि से और न अपनी पीठों को, और न उन की कोई सहायता की जायेगी (तो ऐसी बातें नहीं करेंगे)।

40. बल्कि वह समय उन पर आ जायेगा अचानक, और उन्हें आश्चर्य चकित कर देगा, जिसे वह फेर नहीं सकेंगे और न उन्हें समय दिया जायेगा।

41. और उपहास किया गया बहुत से रसूलों का आप से पहले, तो घेर लिया उन को जिन्होंने उपहास किया उन में से उस चीज़ ने जिस<sup>[3]</sup>

وَإِذَا رَأَوْا الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا رَأَوْا الَّذِينَ كَفَرُوا وَإِنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا ۚ أَهَذَا الَّذِي يَذْكُرُ إِلَهُكُمْ ۚ وَهُمْ يَذْكُرُونَ ۝

خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ سَأُرِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ۝

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكْفُونَهُمْ عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝

بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ۝

وَلَقَدْ اسْتَهْزَىٰ بُرْسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

1 अर्थात् अल्लाह को नहीं मानते।

2 अर्थात् हमारे न मानने पर यातना आने की धमकी।

3 अर्थात् यातना ने।



का उपहास कर रहे थे।

42. आप पूछिये कि कौन तुम्हारी रक्षा करेगा रात तथा दिन में अत्यंत कृपाशील<sup>[1]</sup> से? बल्कि वह अपने पालनहार की शिक्षा (कुर्आन) से विमुख है।
43. क्या उन के पूज्य हैं जो उन्हें बचायेंगे हम से? वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकेंगे और न हमारी ओर से उन का साथ दिया जायेगा।
44. बल्कि हम ने जीवन का लाभ पहुँचाया है उन को तथा उन के पूर्वजों को यहाँ तक कि (सुखों में) उन की बड़ी आयु गुज़र<sup>[2]</sup> गई, तो क्या वह नहीं देखते कि हम धरती को कम करते आ रहे हैं उस के किनारों से, फिर क्या वह विजयी हो रहे हैं?
45. (हे नबी!) आप कह दें कि मैं तो बह्यी ही के आधार पर तुम्हें सावधान कर रहा हूँ। (परन्तु) बहरे पुकार नहीं सुनते जब उन्हें सावधान किया जाता है।
46. और यदि छू जाये उन को आप के पालनहार की तनिक भी यातना, तो अवश्य पुकारेंगे कि हाये,

قُلْ مَنْ يَكْفُلُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَنِ  
بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُعْرِضُونَ ﴿٤٢﴾

أَمْ لَهُمُ إِلَهَةٌ تَنْصَعُهُمْ مِنْ دُونِنَا  
لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِنَّا  
يُصْحَبُونَ ﴿٤٣﴾

بَلْ مَتَّعْنَا مَوْلَاهُ وَآبَاءَهُمْ حَتَّى طَالَ  
عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّ نَارَ الْأَرْضِ  
تَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا أَفَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾

قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاءَ  
إِذَا مَا يُنذَرُونَ ﴿٤٥﴾

وَلَئِنْ مَسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِنْ عَذَابِ رَبِّكَ  
لَيَقُولُنَّ يُبَيِّنُكَ إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٤٦﴾

1 अर्थात् उस की यातना से।

2 अर्थ यह है कि वह मक्का के काफिर सुख-सुविधा मंद रहने के कारण अल्लाह से विमुख हो गये हैं, और सोचते हैं कि उन पर यातना नहीं आयेगी और वही विजयी होंगे। जब कि दशा यह है कि उन के अधिकार का क्षेत्र कम होता जा रहा है और इस्लाम बराबर फैलता जा रहा है। फिर भी वे इस भ्रम में हैं कि वे प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे।

हमारा विनाश! निश्चय ही हम  
अत्याचारी<sup>[1]</sup> थे।

47. और हम रख देंगे न्याय का तराजू<sup>[2]</sup>  
प्रलय के दिन, फिर नहीं अत्याचार  
किया जायेगा किसी पर कुछ भी,  
तथा यदि होगा राई के दाने के  
बराबर (किसी का कर्म) तो हम  
उसे सामने ला देंगे, और हम बस  
(काफी) हैं हिसाब लेने वाले।

48. और हम दे चुके हैं मूसा तथा  
हारून को विवेक तथा प्रकाश  
और शिक्षाप्रद पुस्तक आज्ञाकारियों  
के लिये।

49. जो डरते हों अपने पालनहार  
से बिन देखे, और वे प्रलय से  
भयभीत हों।

50. और यह (कुर्आन) एक शुभ शिक्षा है  
जिसे हम ने उतारा है, तो क्या तुम  
इस के इन्कारी हो?

51. और हम ने प्रदान की थी इब्राहीम  
को उस की चेतना इस से पहले,  
और हम उस से भली भाँति  
अवगत थे।

52. जब उस ने अपने बाप तथा अपनी  
जाति से कहा: यह प्रतिमायें (मुर्तियाँ)  
कैसी हैं जिन की पूजा में तुम लगे  
हुये हो?

وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَمَةِ فَلَا تُظْلَمُ  
نَفْسٌ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ  
خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَى بِنَا حَاسِبِينَ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ  
وَضِيَاءً وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ۝

الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِنْ  
السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ۝

وَهَٰذَا ذِكْرٌ مُّبْرَكٌ أَنزَلْنَاهُ أَفَأَنْتُمْ لَهُ  
مُنْكَرُونَ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا  
بِهِ عَلِيمِينَ ۝

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هَذِهِ التَّمَاثِيلُ الَّتِي  
أَنْتُمْ لَهَا عَاكِفُونَ ۝

1 अर्थात् अपने पापों को स्वीकार कर लेंगे।

2 अर्थात् कर्मों को तौलने और हिसाब करने के लिये, ताकि प्रत्येक व्यक्ति को  
उस के कर्मानुसार बदला दिया जाये।

53. उन्होंने ने कहा: हम ने पाया है अपने पूर्वजों को इन की पूजा करते हुये।
54. उस (इब्राहीम) ने कहा: निश्चय तुम और तुम्हारे पूर्वज खुले कुपथ में हो।
55. उन्होंने ने कहा: क्या तुम लाये हो हमारे पास सत्य या तुम उपहास कर रहे हो?
56. उस ने कहा: बल्कि तुम्हारा पालनहार आकाशों तथा धरती का पालनहार है जिस ने उन्हें पैदा किया है, और मैं तो इसी का साक्षी हूँ।
57. तथा अल्लाह की शपथ! मैं अवश्य चाल चलूँगा तुम्हारी मूर्तियों के साथ, इस के पश्चात् कि तुम चले जाओ।
58. फिर उस ने कर दिया उन्हें खण्ड-खण्ड, उन के बड़े के सिवा, ताकि वह उस की ओर फिरें।
59. उन्होंने ने कहा: किस ने यह दशा कर दी है हमारे पूज्यों (देवताओं) की? वास्तव में वह कोई अत्याचारी होगा।
60. लोगों ने कहा: हम ने सुना है एक नवयुवक को उन की चर्चा करते जिसे इब्राहीम कहा जाता है।
61. लोगों ने कहा: उसे लाओ लोगों के सामने ताकि लोग देखें।
62. उन्होंने ने पूछा: क्या तू ने ही यह किया है हमारे पूज्यों के साथ, हे इब्राहीम?

قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا عِبَادِينَ ۝

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

قَالُوا احْشَبْنَا يَا حَقِّقُ أَفَ أَنْتَ مِنَ اللَّعِينِينَ ۝

قَالَ بَلْ رَبُّكُمْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي فَطَرَهُنَّ ۖ وَأَنَا عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝

وَتَاللَّهِ لَا كَيْدَ أَصْنَأُكُمْ بَعْدَ أَنْ تُولُوا مُدْبِرِينَ ۝

فَجَعَلَهُمْ جُودًا إِلَّا كِبِيرًا لَهُمْ لَعَلَّهُمْ إِلَيْهِ يَرْجِعُونَ ۝

قَالُوا مَنْ فَعَلَ هَٰذَا بِالْهَيْتَةِ إِنَّهُ لِمِنَ الظَّالِمِينَ ۝

قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ ۝

قَالُوا فَاتُوا بِهِ عَلَىٰ عَيْنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ ۝

قَالُوا أَأَنْتَ فَعَلْتَ هَٰذَا بِالْهَيْتَةِ يَا إِبْرَاهِيمُ ۝



63. उस ने कहा: बल्कि इसे इन के इस बड़े ने किया<sup>[1]</sup> है, तो उन्हीं से पूछ लो यदि वह बोलते हों?

قَالَ بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَذَا فَاسْأَلُوهُمْ  
إِنْ كَانُوا يَنْطِقُونَ ۝

64. फिर अपने मन में वे सोच में पड़ गये। और (अपने मन में) कहा: वास्तव में तुम्हीं अत्याचारी हो।

فَرَجَعُوا إِلَى أَنْفُسِهِمْ فَقَالُوا لَوْلَا إِلَهُكُمُ  
الظَّالِمُونَ ۝

65. फिर वह ओंधे कर दिये गये अपने सिरों के बल<sup>[2]</sup> (और बोले): तू जानता है कि यह बोलते नहीं हैं।

ثُمَّ نَكَّسُوا عَلَى رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتُمْ  
مَا هَؤُلَاءِ يَنْطِقُونَ ۝

66. इब्राहीम ने कहा: तो क्या तुम इबादत (वंदना) अल्लाह के सिवा उस की करते हो जो न तुम्हें कुछ लाभ पहुँचा सकते हैं और न तुम्हें हानि पहुँचा सकते हैं?

قَالَ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا  
وَلَا يَضُرُّكُمْ ۝

67. तुफ़ (धू) है तुम पर और उस पर जिस की तुम इबादत (वंदना) करते हो अल्लाह को छोड़ कर। तो क्या तुम समझ नहीं रखते हो?

أَفِ لَكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ  
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

68. उन्होंने ने कहा: इस को जला दो तथा सहायता करो अपने पूज्यों की, यदि तुम्हें कुछ करना है।

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ  
فَاعِلِينَ ۝

69. हम ने कहा: हे अग्नि! तू शीतल तथा शान्ति बन जा इब्राहीम पर।

فَلَمَّا يَنْتَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَى إِبْرَاهِيمَ ۝

70. और उन्होंने ने उस के साथ बुराई चाही, तो हम ने उन्हीं को क्षतिग्रस्त कर दिया।

وَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَخْسَرِينَ ۝

1 यह बात इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उन्हें उन के पूज्यों की विवशता दिखाने के लिये कही।

2 अर्थात् सत्य को स्वीकार कर के उस से फिर गये।

71. और हम उस (इब्राहीम) को बचा कर ले गये तथा लूत<sup>[1]</sup> को उस भूमि<sup>[2]</sup> की ओर जिस में हम ने सम्पन्नता रखी है विश्व वासियों के लिये।

72. और हम ने उसे प्रदान किया (पुत्र) इसहाक और (पौत्र) याकूब उस पर अधिक, और प्रत्येक को हम ने सत्कर्मी बनाया।

73. और हम ने उन्हें अग्रणी (प्रमुख) बना दिया जो हमारे आदेशानुसार (लोगों को) सुपथ दर्शाते हैं तथा हम ने वहूयी (प्रकाशना) की उन की ओर सत्कर्मी के करने तथा नमाज़ की स्थापना करने और ज़कात देने की, तथा वे हमारे ही उपासक थे।

74. तथा लूत को हम ने निर्णय शक्ति और ज्ञान दिया, और बचा लिया उस बस्ती से जो दुष्कर्म कर रही थी, वास्तव में वे बुरे अवैज्ञाकारी लोग थे।

75. और हम ने प्रवेश दिया उसे अपनी दया में, वास्तव में वह सदाचारियों में से था।

76. तथा नूह को (याद करो) जब उस ने पुकारा इन (नबियों) से पहले। तो हम ने उस की पुकार सुन ली, फिर उसे और उस के घराने को मुक्ति दी महा पीड़ा से।

وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ ۝

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۝ وَكُلًّا جَعَلْنَا صَالِحِينَ ۝

وَجَعَلْنَاهُمْ أِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَإِقَامَ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءَ الزَّكَاةِ وَكَانُوا تَائِعِينَ ۝

وَلُوطًا الَّتِي هُكِّمَ وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ تَعْمَلُ الْغَبِيثَ إِنَّهُمْ كَانُوا أَقْوَمَ سَوْءٍ فَسَقِينَ ۝

وَادْخَلْنَاهُ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝

وَنُوحًا إِذْ نَادَى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۝

1 लूत अलैहिस्सलाम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे।

2 इस से अभिप्राय सीरिया देश है। और अर्थ यह है कि अल्लाह ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की अग्नि से रक्षा करने के पश्चात् उन्हें सीरिया देश की ओर प्रस्थान कर जाने का आदेश दिया। और वह सीरिया चले गये।

77. और उस की सहायता की उस जाति के मुकाबले में जिन्होंने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया, वास्तव में वे बुरे लोग थे। अतः हम ने डुबो दिया उन सभी को।

وَكُفِّرْنَا عَنْ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا  
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ۝

78. तथा दावूद और सुलैमान को (याद करो) जब वह दोनों निर्णय कर रहे थे खेत के विषय में जब रात्रि में चर गईं उसे दूसरों की बकरियाँ, और हम उन का निर्णय देख रहे थे।

وَدَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ إِذْ يَحْكُمَانِ فِي الْحَرْثِ إِذْ  
نَفَثَتْ فِيهِ غَمَمُ الْقَوْمِ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ  
شَاهِدِينَ ۝

79. तो हम ने उस का उचित निर्णय समझा दिया सुलैमान<sup>[1]</sup> को, और प्रत्येक को हम ने प्रदान किया था निर्णय शक्ति तथा ज्ञान, और हम ने आधीन कर दिया था दावूद के साथ पर्वतों को जो (अल्लाह की पवित्रता का) वर्णन करते थे तथा पक्षियों को, और हम ही इस कार्य के करने वाले थे।

فَقَعَّمْنَاهُ صُلَيْمَانَ ۚ وَكُلًّا آتَيْنَاهُمْ حُكْمًا وَعِلْمًا  
وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ  
وَالطَّيْرَ وَكُنَّا فَاعِلِينَ ۝

80. तथा हम ने उस (दावूद) को सिखाया तुम्हारे लिये कवच बनाना ताकि तुम्हें बचाये तुम्हारे आक्रमण से, तो क्या तुम कृतज्ञ हो?

وَعَلَّمْنَاهُ صَنْعَةَ لَبُؤٍ لَّكُمْ  
لِيُحْصِنَكُمْ مِنْ بَأْسِكُمْ فَهَلْ أَنْتُمْ  
شَاكِرُونَ ۝

81. और सुलैमान के आधीन कर दिया

وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ عَاصِفَةً تَجْرِي بِأَمْرِهِ إِلَى

1 हदीस में वर्णित है कि दो नारियों के साथ शिशु थे। भेड़िया आया और एक को ले गया तो एक ने दूसरी से कहा कि तुम्हारे शिशु को ले गया है और निर्णय के लिये दावूद के पास गयीं। उन्होंने ने बड़ी के लिये निर्णय कर दिया। फिर वह सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास आयी, उन्होंने ने कहा, छुरी लाओ मैं तुम दोनों के लिये दो भाग कर दूँ। तो छोटी ने कहा: ऐसा न करें अल्लाह आप पर दया करे, यह उसी का शिशु है। यह सुन कर उन्होंने ने छोटी के पक्ष में निर्णय कर दिया। (बुखारी, 3427, मुस्लिम, 1720)



उग्र वायु को, जो चल रही थी उस के आदेश से<sup>[1]</sup> उस धरती की ओर जिस में हम ने सम्पन्नता (विभूतियाँ) रखी हैं, और हम ही सर्वज्ञ हैं।

82. तथा शैतानों में से उन्हें (उस के आधीन कर दिया) जो उस के लिये डुबकी लगाते<sup>[2]</sup> तथा इस के सिवा दूसरे कार्य करते थे, और हम ही उन के निरीक्षक<sup>[3]</sup> थे।

83. तथा अय्युब (की उस स्थिति) को (याद करो) जब उस ने पुकारा अपने पालनहार को कि मुझे रोग लग गया है। और तू सब से अधिक दयावान् है।

84. तो हम ने उस की गुहार सुन ली<sup>[4]</sup> और दूर कर दिया जो दुःख उसे था, और प्रदान कर दिया उसे उस का परिवार तथा उतने ही और उन के साथ, अपनी विशेष दया से तथा शिक्षा के लिये उपासकों की।

85. तथा इस्माईल और इद्रीस तथा जुल किफल को (याद करो), सभी सहनशीलों में से थे।

الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ  
خَالِقِينَ ۝

وَمِنَ الشَّيْطَانِ مَنْ يَغْوُ صُنُوفَ لَهُ وَيَعْمَلُونَ  
عَمَلًا دُونَ ذَلِكَ وَكُنَّا لَهُمْ حَفِظِينَ ۝

وَاَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ  
وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ۝

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ مِنْ ضِرٍّ وَأَتَيْنَاهُ  
أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذُرِّيَّاتٍ لِلْعَالَمِينَ ۝

وَالْإِسْمَاعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ كُلٌّ مِّنَ  
الصَّابِرِينَ ۝

1 अर्थात् वायु उन के सिंहासन को उन के राज्य में जहाँ चाहते क्षणों में पहुँचा देती थी।

2 अर्थात् मोतियाँ तथा जवाहिरात निकालने के लिये।

3 ताकि शैतान उन को कोई हानि न पहुँचाये।

4 आदरणीय अय्युब अलैहिस्सलाम की अल्लाह ने उन के धन-धान्य तथा परिवार में परीक्षा ली। वह स्वयं रोगग्रस्त हो गये। परन्तु उन के धैर्य के कारण अल्लाह ने उन को फिर स्वस्थ कर दिया और धन-धान्य के साथ ही पहले से दो गुने पुत्र प्रदान किये।

86. और हम ने प्रवेश दिया उन को अपनी दया में, वास्तव में वे सदाचारी थे।

وَادْخَلْنَاهُمْ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُمْ مِنَ  
الْصَّالِحِينَ ۝

87. तथा जुन्नून<sup>[1]</sup> को जब वह चला<sup>[2]</sup> गया क्रोधित हो कर और सोचा कि हम उसे पकड़ेंगे नहीं, अन्ततः उस ने पुकारा अंधेरो में कि नहीं है कोई पूज्य तेरे सिवा, तू पवित्र है, वास्तव में मैं ही दोषी<sup>[3]</sup> हूँ।

وَذَالتُ الْوُجُوهُ إِذْ ذُهِبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَنْ لَنْ  
نَقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادَى فِي الظُّلُمَاتِ أَنْ لَا  
إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ  
الظَّالِمِينَ ۝

88. तब हम ने उस की पुकार सुन ली, तथा उसे मुक्त कर दिया शोक से, और इसी प्रकार हम बचा लिया करते हैं ईमान वालों को।

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ  
وَكَذَلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِينَ ۝

89. तथा ज़करिय्या को (याद करो) जब पुकारा उस ने अपने पालनहार<sup>[4]</sup> को, हे मेरे पालनहार! मुझे मत छोड़ दे अकेला, और तू सब से अच्छा उत्तराधिकारी है।

وَزَكَرِيَّا إِذْ نَادَى رَبَّهُ رَبِّ لَا تَذَرْنِي  
فَرْدًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ ۝

90. तो हम ने सुन ली उस की पुकार तथा प्रदान कर दिया उसे यह्या, और सुधार दिया उस के लिये उस

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَوَهَبْنَا لَهُ يَحْيَىٰ وَأَصْلَحْنَاهُ  
ذُو جَبَّةٍ إِنَّهُمْ كَانُوا يُسْرِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ

1 जुन्नून से अभिप्रेत यूनस अलैहिस्सलाम है। नून का अर्थ अरबी भाषा में मछली है। उन को "साहिबुल हूत" भी कहा गया है। अर्थात् मछली वाला। क्यों कि उन को अल्लाह के आदेश से एक मछली ने निगल लिया था। इस का कुछ वर्णन सूरह यूनस में आ चुका है। और कुछ सूरह साफ़ात में आ रहा है।

2 अर्थात् अपनी जाति से क्रोधित हो कर अल्लाह के आदेश के बिना अपनी बस्ती से चले गये। इसी पर उन्हें पकड़ लिया गया।

3 सहीह हदीस में आता है कि जो भी मुसलमान इस शब्द के साथ किसी विषय में दुआ करेगा तो अल्लाह उस की दुआ को स्वीकार करेगा। (तिर्मिज़ी-3505)

4 आदरणीय ज़करिय्या ने एक पुत्र के लिये प्रार्थना की, जिस का वर्णन सूरह आले इमरान तथा सूरह ता-हा में आ चुका है।

की पत्नी को। वास्तव में वह सभी दौड़-धूप करते थे सत्कर्मों में और हम से प्रार्थना करते थे रुचि तथा भय के साथ, और हमारे आगे झुके हुये थे।

91. तथा जिस ने रक्षा की अपने सतीत्व<sup>[1]</sup> की, तो फूंक दी हम ने उस के भीतर अपनी आत्मा से, और उसे तथा उस के पुत्र को बना दिया एक निशानी संसार वासियों के लिये।

92. वास्तव में तुम्हारा धर्म एक ही धर्म<sup>[2]</sup> है, और मैं ही तुम सब का पालनहार (पूज्य) हूँ। अतः मेरी ही इबादत (वन्दना) करो।

93. और खण्ड-खण्ड कर दिया लोगों ने अपने धर्म को (विभेद कर के) आपस में, सब को हमारी ओर ही फिर आना है।

94. फिर जो सदाचार करेगा और वह एकेश्वरवादी हो, तो उस के प्रयास की उपेक्षा नहीं की जायेगी, और हम उसे लिख रहे हैं।

95. और असंभव है किसी भी बस्ती पर जिस का हम ने विनाश कर<sup>[3]</sup> दिया

وَيَدْعُونَآ رَعِبًا وَرَهَبًا وَكَانُواآلِنَا  
خُشْعِينَ ۝

وَالَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَعْنَا فِيهَا مِنْ  
دُونِنَا وَجَعَلْنَاهَا وَابْنَهَا آيَةً لِّلْعَالَمِينَ ۝

إِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً  
وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ۝

وَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ كُلَّ إِلَهٍ تَارِكُونَ ۝

فَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ  
فَلَآ كُفْرَآنَ لِّسَعْيِهِمْ وَإِنَّا لَهُ كَاتِبُونَ ۝

وَحَرَامٌ عَلٰٓى قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝

1 इस से संकेत मर्यम तथा उस के पुत्र ईसा (अलैहिस्सलाम) की ओर है।

2 अर्थात् सब नबियों का मूल धर्म एक है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मैं मर्यम के पुत्र ईसा से अधिक संबंध रखता हूँ। क्यों कि सब नबी भाई भाई हैं उन की मायें अलग अलग हैं, सब का धर्म एक है। (सहीह बुखारी: 3443)। और दूसरी हदीस में यह अधिक है कि: मेरे और उस के बीच कोई और नबी नहीं है। (सहीह बुखारी: 3442)

3 अर्थात् उस के वासियों के दुराचार के कारण।



है कि वह फिर (संसार में) आ जाये।

96. यहाँ तक कि जब खोल दिये जायेंगे याजूज तथा माजूज<sup>[1]</sup> और वे प्रत्येक ऊँचाई से उतर रहे होंगे।

97. और समीप आ जायेगा सत्य<sup>[2]</sup> वचन, तो अकस्मात् खुली रह जायेंगी काफ़िरों की आँखें, (वे कहेंगे): "हाय हमारा विनाश"! हम असावधान रह गये इस से, बल्कि हम अत्याचारी थे।

98. निश्चय तुम सब तथा तुम जिन (मूर्तियों) को पूज रहे हो अल्लाह के अतिरिक्त नरक के ईंधन है, तुम सब वहाँ पहुँचने वाले हो।

99. यदि वे वास्तव में पूज्य होते, तो नरक में प्रवेश नहीं करते, और प्रत्येक उस में सदावासी होंगे।

100. उन की उस में चीखें होंगी तथा वे उस में (कुछ) सुन नहीं सकेंगे।

101. (परन्तु) जिन के लिये पहले ही से हमारी ओर से भलाई का निर्णय हो चुका है, वही उस से दूर रखे जायेंगे।

102. वे उस (नरक) की सरसर भी नहीं सुनेंगे, और अपनी मन चाही चीज़ों में सदा (मग्न) रहेंगे।

103. उन्हें उदासीन नहीं करेगी (प्रलय के दिन की) बड़ी व्यग्रता, तथा फ़रिश्ते

حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ ۝

وَأَقْرَبَ الْوَعْدِ الْحَقُّ فَأَذَاهِ شَاحِصَةٌ  
أَبْصَارِ الَّذِينَ كَفَرُوا يَوْمَئِذٍ كُنَّا قَدْ كُنَّا فِي  
غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا بَلْ كُنَّا ظَالِمِينَ ۝

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ حَصَبُ  
جَهَنَّمَ أَنْتُمْ لَهَا وَرَدُونَ ۝

لَوْ كَانَ هَؤُلَاءِ إِلَهًا مَا وَرَدُواهَا  
وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ  
أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ۝

لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ  
أَنْفُسُهُمْ خَالِدُونَ ۝

لَا يَحْزَنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ

1 याजूज तथा माजूज के विषय में देखिये सूरह कहफ़, आयत: 93 से 100 तक का अनुवाद।

2 सत्य वचन से अभिप्राय प्रलय का वचन है।

उन्हें हाथों-हाथ ले लेंगे (तथा कहेंगे):  
यही तुम्हारा वह दिन है जिस का  
तुम्हें वचन दिया जा रहा था।

104. जिस दिन हम लपेट<sup>[1]</sup> देंगे आकाश  
को पंजिका के पन्नों को लपेट देने  
के समान, जैसे हम ने आरंभ किया  
था प्रथम उत्पत्ति का उसी प्रकार  
उसे<sup>[2]</sup> दुहरायेंगे, इस (वचन) को  
पूरा करना हम पर है, और हम  
पूरा कर के रहेंगे।
105. तथा हम ने लिख दिया है ज़बूर<sup>[3]</sup> में  
शिक्षा के पश्चात् कि धरती के  
उत्तराधिकारी मेरे सदाचारी भक्त होंगे।
106. वस्तुतः इस (बात) में एक बड़ा  
उपदेश है उपासकों के लिये।
107. और (हे नबी!) हम ने आप को  
नहीं भेजा है किन्तु समस्त संसार के  
लिये दया बना<sup>[4]</sup> कर।
108. आप कह दें कि मेरी ओर तो बस  
यही वही की जा रही है कि तुम सब  
का पूज्य बस एक ही पूज्य है, फिर  
क्या तुम उस के आज्ञाकारी<sup>[5]</sup> हो?

هَذَا يَوْمُكُمْ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٢٠﴾

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِ لِلْكِتَابِ كَمَا  
بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا  
فَاعِلِينَ ﴿٢١﴾

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ  
الْأَرْضَ يَرثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴿٢٢﴾

إِنَّ فِي هَذَا لَبَلَاءً لِقَوْمٍ غَيْبِينَ ﴿٢٣﴾

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ﴿٢٤﴾

قُلْ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِإِلَهِكُمْ إِلَهُ وَاحِدٌ  
فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٢٥﴾

1 (देखिये: सूरह जुमर, आयत: 67)

2 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भाषण दिया कि लोग अल्लाह के पास बिना जूते के, नग्न, तथा बिना खतूने के एकत्र किये जायेंगे। फिर इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सर्वप्रथम वस्त्र पहनाये जायेंगे। (सहीह बुखारी, 3349)

3 ज़बूर वह पुस्तक है जो दावूद अलैहिस्सलाम को प्रदान की गयी।

4 अर्थात् जो आप पर ईमान लायेगा, वही लोक-परलोक में अल्लाह की दया का अधिकारी होगा।

5 अर्थात् दया एकेश्वरवाद में है, मिश्रणवाद में नहीं।

109. फिर यदि वे विमुख हों, तो आप कह दें कि मैं ने तुम्हें समान रूप से सावधान कर दिया<sup>[1]</sup>, और मैं नहीं जानता कि समीप है अथवा दूर जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है।
110. वास्तव में वही जानता है खुली बात को तथा जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो।
111. तथा मुझे यह ज्ञान (भी) नहीं, संभव है यह<sup>[2]</sup> तुम्हारे लिये कोई परीक्षा हो तथा लाभ हो एक निर्धारित समय तक?
112. उस (नबी) ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! सत्य के साथ निर्णय कर दे। और हमारा पालनहार अत्यंत कृपाशील है जिस से सहायता मांगी जाये उन बातों पर जो तुम लोग बना रहे हो।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ إِنِّي نَذَرْتُكُمْ عَلَى سَوَاءٍ وَإِنْ أَدْرِي أَقْرَبُ أَمْرِ بَعِيدٍ مَّا تُوعَدُونَ ۝

إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ۝

وَإِنْ أَدْرِي أَلَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۝

قُلْ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ وَرَبُّنَا الرَّحْمَنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ۝

1 अर्थात् ईमान न लाने और मिश्रणवाद के दुष्परिणाम से।

2 अर्थात् यातना में विलम्ब।